Seventeenth Loksabha

>

Title: Need to set up Srimant Shankar Dev foundation on the lines of Dr. Ambedkar foundation.

श्री दिलीप शइकीया (मंगलदाई): बहुत-बहुत धन्यवाद महोदय ।

"धन्य-धन्य कलिकाल, धन्य नर तनुभाल, धन्य जनम भारतबरिषे"

असमिया साहित्य, संस्कृति, समाज व आध्यात्मिक जीवन में युगांतरकारी महापुरुष जगदगुरु श्रीमंत शंकरदेव का योगदान अविस्मरणीय है । उन्होंने पूर्वोत्तर भारत में सामाजिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक क्रांति का सूत्रपात किया । पूर्वोत्तर भारत में वैष्णव संस्कृति और श्रीकृष्ण संस्कृति के प्रसार के लिए जगदगुरु श्रीमंत शंकरदेव ने बरगीत, अंकिया नाट, भाओना, नाघर, सत्र स्थापित कर पूरे पूर्वोत्तर भारत के निवासियों को भाईचारे, सामाजिक सदभाव, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक राष्ट्रीयता का संदेश दिया । पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के आज के एकात्मवाद के सिद्धांत को 15वीं शताब्दी में महापुरुष श्रीमंत शंकर देव ने प्रकृति रक्षा के विचारों को प्रतिपादित कर कहा था कि-

"कुकुर, श्रीगाल, गदरभरो आत्माराम-जानियों सबाको कोरियो प्रणाम कोरियो प्रणाम ।"

अर्थात् कुत्ता, भेड़िया और गधा, सभी की आत्मा एक ही है । देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा किया गया था, लेकिन देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य लगभग 15वीं शताब्दी में श्रीमंत शंकरदेव ने अपने विचारों और कार्यों के माध्यम से किया था । इन विचारों और सिद्धांतों को प्रतिपादित करने के लिए उन्होंने दो बार सम्पूर्ण भारत वर्ष की पदयात्रा की थी । 15वीं शताब्दी में समकालीन भक्ति आंदोलन में नेतृत्व देने वाले महान संतों में भारतीय राष्ट्रवाद को सबसे अधिक परिभाषित श्रीमंत शंकरदेव ने ही किया था । उन्होंने कहा था –

"कोटि-कोटि जन्मान्तरे जाहार आसे महापून्य राखि
हि-हि कदासित मनुष्य होअय भारत बरिषे आसी ।"

अर्थात् करोड़ों जन्मों के बाद जो पुण्य प्राप्त होता है उसी पूण्य के फलस्वरूप मनुष्य को भारत वर्ष में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त होता है । उन्होंने यह भी कहा था-

"धन्य-धन्य कलिकाल धन्य नर तनु भाल धन्य धन्य भारत बरिषे ।"

भारत वर्ष की इतनी महान संकल्पना श्रीमंत शंकरदेव द्वारा प्रतिपादित की गयी थी ।

माननीय अध्यक्ष : आप अपनी मांग रखिए कि आपको सरकार से क्या लगवाना या करवाना है? आप कहें तो आपकी तरफ से मैं रख देता हूं ।

श्री दिलीप शइकीया : सर, मैं एक मिनट में समाप्त कर दूंगा । लेकिन दुर्भाग्य से ऐसे महापुरुष के बारे में पूरे भारतवर्ष में बहुत ही कम जानकारी है । अत: मेरा आपके माध्यम से माननीय संस्कृति मंत्री जी से निवेदन है कि डॉ. अम्बेडकर फाउंडेशन की तरह देश में श्रीमंत शंकरदेव फाउंडेशन स्थापित किया जाए । जिससे पूर्वोत्तर ही नहीं, सम्पूर्ण भारत में भी श्रीमंत शंकरदेव की शिक्षाओं और सिद्धांतों को पहुंचाया जा सके । साथ ही साथ देश भर में श्रीमंत शंकरदेव की पुण्य जन्म तिथि को एन.आई. एक्ट के तहत राजकीय अवकाश घोषित किया जाए जिससे उनके आदर्शों और सिद्धांतों को सच्ची श्रद्धा और सम्मान दिया जा सके ।

माननीय अध्यक्ष : माननीय सदस्यगण, शून्य काल में जिस विषय पर आप सरकार का ध्यान आकृष्ट कराना चाहते हैं, संक्षिप्त और सारगर्भित तरीके से उसे सदन में रखें ताकि सरकार का और देश की जनता का आपके विषय पर ध्यान पहुंच सके । यही मेरा आपसे आग्रह है । श्री सी.पी. जोशी को श्री दिलीप साईकिया द्वारा उठाए गए विषय के साथ संबद्ध करने की अनुमति प्रदान की जाती है ।